अध्ययन सामग्री
बी.ए. (संस्कृत) पार्ट 3
प्रश्न पत्र – षष्ठ
डॉ० मालविका तिवारी
सहायक प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
एच.डी. जैन कॉलेज
वी.कुं.सिं. वि., आरा

07.07.20

रूपसिद्धि

1) अधिगोपम् – लौकिक विग्रह – गोपि
अलौकिक विग्रह – गोपा ङि अधि

यहाँ 'अव्ययं विभक्ति०' सूत्र से सप्तमी विभक्ति के अर्थ में 'अधि' अव्यय का 'गोपा' के साथ समास हुआ।

'कृत्तद्धित समासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा

'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् (ङि) विभक्ति का लोप

गोपा अधि

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से 'अधि' की उपसर्जन संज्ञा

'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जन संज्ञक 'अधि' का पूर्व प्रयोग

अधि गोपा

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा

'स्वौजसमौट्०' सूत्र से 'सु' विभक्ति

अधि गोपा सु

'अव्ययीभावश्च' सूत्र से नपुंसक लिङ्ग

'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' इस सूत्र से 'गोपा' के आकार को ह्रस्व हो कर – अधि गोप सु

'अव्ययीभावश्च' सूत्र से अव्यय संज्ञा होने के कारण प्रातिपदिक संज्ञा के बाद आयी हुई सु विभक्ति का लोप

Scanned by CamScanner

'अव्ययादाप्सुपः' सूत्र से प्राप्त था, किन्तु 'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र सुप् लोप का निषेध कर 'सु' को 'अम्' आदेश

अधि गोप अम्

'अमि पूर्वः' से 'अम्' के अ को पूर्वरूप होकर

अधिगोपम् रूप सिद्ध होता है।

2/ अधिहरि — लौकिक विग्रह — हरौ

अलौकिक विग्रह — हरि ङि अधि

यहाँ 'अव्ययं विभक्ति०' सूत्र से सप्तमी विभक्ति के अर्थ में 'अधि' अव्यय का 'हरि' के साथ समास

'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा

'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् (ङि) का लोप

हरि अधि

'अव्ययं विभक्ति०' इस सूत्र में अव्ययं के प्रथमानिर्दिष्ट होने से 'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से अव्यय 'अधि' की उपसर्जन संज्ञा

'उपसर्जनं पूर्वम्' सूत्र से उपसर्जनसंज्ञक 'अधि' का पूर्वप्रयोग

अधि हरि

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्राति[illegible]दिक संज्ञा

'स्वौजसमौट्०' सूत्र से सुप् प्रत्यय

अधि हरि सु

'अव्ययीभावश्च' सूत्र से अव्यय संज्ञा

'अव्ययादाप्सुपः' से सुप् (सु) का लोप होकर

अधिहरि रूप सिद्ध होता है।

Scanned by CamScanner

3) सुमद्रम् — लौकिक विग्रह — मद्राणां समृद्धिः
अलौकिक विग्रह — मद्र आम् सु

यहाँ 'अव्ययं विभक्ति०' सूत्र से समृद्धि अर्थ में विद्यमान 'सु' अव्यय का 'मद्राणाम्' सुबन्त के साथ समास हुआ।

'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा

'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् (आम्) का लोप

मद्र सु

'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से अव्यय 'सु' की उपसर्जन संज्ञा

'उपसर्जनं पूर्वम्' से 'सु' का पूर्व प्रयोग

सु मद्र

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा

'स्वौजसमौट्०' से सु

सु मद्र सु

'अव्ययीभावश्च' से अव्यय संज्ञा

'अव्ययादाप्सुपः' से सु लोप प्राप्त था, किन्तु

'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से उसके लोप का निषेध, उसका अम् आदेश

सुमद्र अम्

'अमि पूर्वः' सूत्र से अम् के अ को पूर्वरूप होकर

<u>सुमद्रम्</u> प्रयोग सिद्ध हुआ।

4) दुर्यवनम् — लौकिक विग्रह - यवनानां व्यृद्धिः
अलौकिक विग्रह - यवन आम् दुर्

'यवनानां व्यृद्धिः' इस विग्रह में 'यवन आम् तथा दुर्' का 'अव्ययं विभक्ति०' सूत्र से व्यृद्धि अर्थ में अव्ययीभाव समास हुआ।

'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा

Scanned by CamScanner

'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् (आम्) का लोप

यवन दुर्

'प्रथमानिर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से 'दुर्' की उपसर्जन संज्ञा

'उपसर्जनं पूर्वम्' से उपसर्जनसंज्ञक 'दुर्' का पूर्व प्रयोग

दुर् यवन

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा

'स्वौजसमौट्०' सूत्र से सु विभक्ति

दुर् यवन सु

'अव्ययादाप्सुपः' से 'सु' लोप प्राप्त होने पर,

'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से उसका निषेध तथा उसे 'अम्' आदेश हो गया।

दुर् यवन अम्

'अमि पूर्वः' से अम् के अ को पूर्वरूप होकर

दुर् यवनम् – दुर्यवनम् पद बनता है।

5) निर्मक्षिकम् — लौकिक विग्रह – मक्षिकाणामभावः

अलौकिक विग्रह – मक्षिका आम् निर्

'मक्षिकाणामभावः' इस लौकिक विग्रह में मक्षिका आम् तथा निर् का 'अव्ययं विभक्ति०' सूत्र से अभाव अर्थ में अव्ययीभाव समास हुआ।

'कृत्तद्धितसमासाश्च' से प्रातिपदिक संज्ञा

'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् (आम्) का लोप

मक्षिका निर्

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' से 'निर्' की उपसर्जन संज्ञा

'उपसर्जनं पूर्वम्' से उपसर्जनसंज्ञक 'निर्' का पूर्व प्रयोग

Scanned by CamScanner

निर् मक्षिका

'अव्ययीभावश्च' सूत्र से नपुंसकत्व होने पर

'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' से मक्षिका के आकार को ह्रस्व हो गया — निर् मक्षिक

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा

'स्वौजसमौट्०' सूत्र से सु विभक्ति — निर् मक्षिक सु

'अव्ययादाप्सुपः' से सु लोप प्राप्त होने पर

'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' से सु के स्थान पर अम् आदेश

निर् मक्षिक अम्

'अमि पूर्वः' से अम् के अ को पूर्व रूप होकर

निर् मक्षिकम् — निर्मक्षिकम् पद बनता है।

6/ अतिहिमम् — लौकिक विग्रह — हिमस्य अत्ययः

अलौकिक विग्रह — हिम ङस् अति

अत्यय का अर्थ होता है — ध्वंस।

'हिमस्य अत्ययः' इस विग्रह में 'हिम ङस' एवं अत्ययार्थक 'अति' का 'अव्ययं विभक्ति०' इस सूत्र से अव्ययीभाव समास हुआ।

'कृत्तद्धित समासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा

'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' सूत्र से सुप् (ङस्) का लोप

हिम अति

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से 'अति' की उपसर्जन संज्ञा

'उपसर्जनं पूर्वम्' से उपसर्जन संज्ञक 'अति' का पूर्व प्रयोग

अति हिम

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा

'स्वौजसमौट्०' से सु विभक्ति — अति हिम सु

'अव्ययादाप्सुपः' से सु लोप प्राप्त होने पर

Scanned by CamScanner

'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' से 'सु' विभक्ति के लोप का निषेध और उसके स्थान पर 'अम्' आदेश

अति हिम अम्

'अमि पूर्वः' से 'अम्' के अ को पूर्वरूप होकर

अतिहिमम् पद बनता है।

7/ अतिनिद्रम् — लौकिक विग्रह - निद्रा असम्प्रति

अलौकिक विग्रह - निद्रा सु अति

'अव्ययं विभक्ति०' इस सूत्र से असम्प्रति अर्थ में वर्तमान 'अति' अव्यय का 'निद्रा' शब्द के साथ समास

'कृत्तद्धितसमासाश्च' सूत्र से प्रातिपदिक संज्ञा

'सुपो धातुप्रातिपदिकयोः' से सुप् (सु) का लोप

निद्रा अति

'प्रथमा निर्दिष्टं समास उपसर्जनम्' सूत्र से 'अति' की उपसर्जन संज्ञा

'उपसर्जनं पूर्वम्' से उपसर्जनसंज्ञक 'अति' का पूर्व प्रयोग

अति निद्रा

'एकदेशविकृतमनन्यवत्' इस न्याय से पुनः प्रातिपदिक संज्ञा।

'अव्ययीभावश्च' सूत्र से नपुंसक

'ह्रस्वो नपुंसके प्रातिपदिकस्य' से अन्त्य 'आ' को ह्रस्व

अतिनिद्र

'स्वौजसमौट्०' से सु विभक्ति

अति निद्र सु

'अव्ययादाप्सुपः' से 'सु' लोप प्राप्त होने पर

'नाव्ययीभावादतोऽम्त्वपञ्चम्याः' सूत्र से 'सु' लोप का निषेध कर उसके स्थान पर 'अम्' आदेश

अति निद्र अम्

'अमि पूर्वः' सूत्र से 'अम्' के अ को पूर्वरूप होकर

अतिनिद्रम् पद बनता है।

Scanned by CamScanner